ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/239

मुगल कालीन उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक संरचना और उसका 1857 के विद्रोह पर प्रभाव

पंकज शर्मा

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.298

सारांश

मुगल काल (1526 ई.–1857 ई.) भारतीय प्रशासनिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण और निर्णायक चरण रहा है, जिसमें विकसित प्रशासनिक संरचनाओं ने शासन व्यवस्था के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया। उत्तर प्रदेश, जो मुगल साम्राज्य का प्रमुख राजनीतिक एवं प्रशासनिक केंद्र था, इन नीतियों और संस्थाओं के क्रियान्वयन का प्रमुख क्षेत्र रहा।

यह शोध–पत्र मुगल कालीन उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक संरचना विशेषतः सूबा, सरकार, परगना तथा मनसबदारी व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि इन संस्थाओं ने 1857 के विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के निर्माण में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुगल प्रशासन प्रारंभिक चरण में अत्यंत संगठित, केंद्रीकृत एवं प्रभावी था, जिसने प्रशासनिक नियंत्रण और राजस्व संग्रह को सुदृढ़ किया। किन्तु समय के साथ इस व्यवस्था में कई संरचनात्मक कमजोरियाँ उत्पन्न हो गईं। राजस्व प्रणाली की कठोरता, जागीरदारी एवं जमींदारी व्यवस्थाओं के कारण उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ, तथा स्थानीय अधिकारियों की स्वेच्छाचारिता ने ग्रामीण समाज में व्यापक असंतोष को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, प्रशासनिक विकेंद्रीकरण की कमी और नियंत्रण की शिथिलता ने शासन के प्रभाव को कम कर दिया।

इन सभी कारकों ने मिलकर उत्तर प्रदेश में एक ऐसे असंतोषपूर्ण सामाजिक–आर्थिक वातावरण का निर्माण किया, जिसने 1857 के विद्रोह को व्यापक जनाधार प्रदान किया। यह विद्रोह केवल सैन्य असंतोष का परिणाम नहीं था, बल्कि यह दीर्घकालिक प्रशासनिक दोषों, आर्थिक शोषण और सामाजिक असंतुलन की परिणति भी था।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मुगल प्रशासनिक संरचना की अंतर्निहित कमजोरियाँ और उससे उत्पन्न तनाव 1857 के विद्रोह के प्रमुख आधारभूत कारणों में सम्मिलित थे।

कुंजी शब्द– मुगल प्रशासन, उत्तर प्रदेश, सूबा व्यवस्था, मनसबदारी, राजस्व प्रणाली, 1857 का विद्रोह, सामाजिक असंतोष

प्रस्तावना

मुगल साम्राज्य भारतीय इतिहास का एक ऐसा युग है जिसमें प्रशासनिक संगठन, राजनीतिक केंद्रीकरण और सांस्कृतिक समन्वय अपने चरम पर थे। उत्तर प्रदेश, जिसे उस समय आगरा, इलाहाबाद और अवध जैसे सूबों में विभाजित किया गया था, मुगल शासन का राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र था। यह क्षेत्र न केवल साम्राज्य की सत्ता का आधार था, बल्कि यहाँ विकसित प्रशासनिक नीतियाँ पूरे साम्राज्य के लिए आदर्श मानी जाती थीं।

- **शोध घात्र : इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभागए डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या**

मुगल प्रशासन की विशेषता इसकी केंद्रीकृत प्रकृति थी, जिसमें सम्राट सर्वोच्च सत्ता का धारक था और उसके अधीन एक सुव्यवस्थित नौकरशाही कार्य करती थी।[1] इस प्रशासनिक ढाँचे में स्पष्ट पदानुक्रम, कार्यों का विभाजन तथा उत्तरदायित्व की प्रणाली विद्यमान थी, जिससे शासन संचालन में स्थिरता और नियंत्रण सुनिश्चित होता था।

इसके अतिरिक्त, मुगल प्रशासन ने राजस्व, न्याय और सैन्य व्यवस्था को एकीकृत कर शासन को अधिक प्रभावी बनाया। किंतु समय के साथ यह संरचना जटिल और बोझिल होती गई, जिससे प्रशासनिक दक्षता में गिरावट आने लगी। स्थानीय स्तर पर अधिकारियों की बढ़ती स्वायत्तता, भ्रष्टाचार और राजस्व के अत्यधिक दबाव ने जनता में असंतोष को जन्म दिया। इसी संदर्भ में यह शोध–पत्र मुगल प्रशासनिक ढाँचे की संरचना, उसके विकास तथा उसकी कमजोरियों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि इन तत्वों ने किस प्रकार 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की। साथ ही, यह अध्ययन प्रशासनिक इतिहास को सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास भी करता है, जिससे विषय की व्यापक समझ विकसित हो सके।

शोध की पद्धति एवं स्रोत

इस शोध में ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत–

- अबुल फजल – आइने अकबरी
- बाबर – बाबरनामा

द्वितीयक स्रोत–

- इरफान हबीब
- सतीश चंद्र
- आर.सी. मजूमदार
- एस.एन. सेन

इन स्रोतों के माध्यम से प्रशासनिक संरचना और उसके प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुगल प्रशासनिक संरचना का स्वरूप

(क) सूबा व्यवस्था

अकबर ने प्रशासनिक सुविधा के लिए साम्राज्य को सूबों में विभाजित किया। उत्तर प्रदेश के प्रमुख सूबे–आगरा, इलाहाबाद और अवध थे। प्रत्येक सूबे में सूबेदार नियुक्त होता था, जो सैन्य और प्रशासनिक कार्यों का प्रमुख होता था। इसके अतिरिक्त दीवान, बख्शी और काजी जैसे अधिकारी भी कार्यरत रहते थे।[2]

यह व्यवस्था प्रारम्भ में अत्यंत प्रभावी रही, परंतु बाद में स्थानीय स्तर पर शक्ति का केंद्रीकरण होने लगा, जिससे भ्रष्टाचार बढ़ा।

(ख) सरकार और परगना व्यवस्था

सूबों को छोटे प्रशासनिक इकाइयों–सरकार और परगना में विभाजित किया गया था।

परगना स्तर पर अमील, कानूनगो और पटवारी कार्य करते थे, जो राजस्व संग्रह और भूमि अभिलेखों का संचालन करते थे।[3] यह प्रणाली प्रशासन को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने में सफल रही, परंतु इससे अधिकारियों को जनता का शोषण करने का अवसर भी मिला।

(ग) मनसबदारी प्रणाली

मनसबदारी प्रणाली मुगल प्रशासन की रीढ़ थी। इसमें प्रत्येक अधिकारी को एक निश्चित पद (मनसब) दिया जाता था, जिसके आधार पर उसकी सैन्य और प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ निर्धारित होती थीं। मनसबदारों को वेतन के रूप में जागीर दी जाती थी, जिससे वे राजस्व वसूलते थे। इस प्रणाली ने प्रशासन को मजबूत बनाया, परंतु दीर्घकाल में यह शोषणकारी बन गई।[4]

राजस्व व्यवस्था और आर्थिक प्रभाव

मुगल प्रशासन का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पक्ष उसकी राजस्व प्रणाली व्यवस्था थी, जिसने साम्राज्य की आर्थिक नींव को सुदृढ़ किया। अकबर द्वारा लागू दहसाला प्रणाली के अंतर्गत भूमि की माप, उपज का औसत तथा कीमतों के आधार पर कर निर्धारित किया जाता था। प्रारंभिक चरण में यह व्यवस्था अपेक्षाकृत संतुलित और वैज्ञानिक मानी जाती थी, जिसने राज्य और कृषक के बीच एक स्थिर संबंध स्थापित किया किन्तु समय के साथ इस प्रणाली में कठोरता और शोषण की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। अधिकारियों द्वारा वास्तविक उपज से अधिक अनुमान लगाकर कर निर्धारण किया जाता था, जिससे किसानों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता।[5] इसके परिणाम स्वरूप किसानों को कर्ज लेने के लिए विवश होना पड़ा, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अस्थिरता बढ़ी।

उत्तर प्रदेश के गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में यह प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है, जहाँ कृषि उत्पादन तो उच्च था, परंतु कर का भार भी अत्यधिक था। इसके अतिरिक्त, जागीरदारी व्यवस्था के कारण मनसबदार अल्पकालिक लाभ के लिए अधिक से अधिक राजस्व वसूली करते थे, जिससे कृषकों का शोषण और बढ़ गया।

आर्थिक दृष्टि से यह स्थिति केवल कृषि तक सीमित नहीं रही, बल्कि कुटीर उद्योगों और स्थानीय व्यापार पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा। व्यापारियों पर लगाए गए करों और प्रशासनिक नियंत्रण ने आर्थिक गतिविधियों को बाधित किया।[6]

अतः यह स्पष्ट है कि मुगल कालीन राजस्व व्यवस्था, जो प्रारंभ में आर्थिक स्थिरता का आधार थी, समय के साथ असंतोष और आर्थिक संकट का प्रमुख कारण बन गई, जिसने व्यापक सामाजिक असंतोष को जन्म दिया और 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उत्तर प्रदेश के गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में यह प्रभाव विशेष रूप से देखा गया, जहाँ किसानों में असंतोष तेजी से बढ़ा।

सामाजिक संरचना और प्रशासन

मुगल कालीन प्रशासन केवल राजनीतिक और राजस्व प्रबंधन तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका प्रभाव समाज की संरचना और विभिन्न वर्गों के आपसी संबंधों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्र में, जहाँ कृषि –प्रधान समाज विद्यमान था, प्रशासनिक नीतियों ने सामाजिक संगठन को गहराई से प्रभावित किया।

मुगल प्रशासन में जमींदारों को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, जो राज्य और किसानों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते थे। वे राजस्व संग्रह के साथ–साथ स्थानीय स्तर पर सामाजिक नियंत्रण भी बनाए रखते थे। यद्यपि जमींदारों की भूमिका प्रशासनिक दृष्टि से उपयोगी थी, किन्तु कई बार उन्होंने अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर किसानों का शोषण किया, जिससे सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हुआ।[7]

ग्रामीण स्तर पर पंचायत प्रणाली भी विद्यमान थी, जो स्थानीय विवादों के निपटारे और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में सहायक थी। हालांकि, इन पंचायतों की शक्ति सीमित थी और अंतिम निर्णय प्रायः मुगल अधिकारियों के हाथों में ही निहित रहता था। इसके अतिरिक्त, मुगल प्रशासन ने विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समुदायों के बीच एक प्रकार का संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया, जिससे "गंगा–जमुनी तहजीब" का विकास हुआ। परंतु समय के साथ प्रशासनिक असमानताओं और आर्थिक दबावों के कारण यह संतुलन कमजोर होने लगा।[8]

शहरी क्षेत्रों में कारीगरों, व्यापारियों और अन्य पेशेवर वर्गों का भी विकास हुआ, परन्तु उन पर लगाए गए करों और नियंत्रणों ने उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित किया।

अतः यह स्पष्ट है कि मुगल प्रशासन ने सामाजिक संरचना को एक ओर संगठित किया, तो दूसरी ओर उसमें असमानताओं और तनावों को भी जन्म दिया, जिसने आगे चलकर व्यापक सामाजिक असंतोष को बढ़ावा दिया। ग्रामीण स्तर पर पंचायतें थीं, परंतु उनकी शक्ति सीमित थी। वास्तविक नियंत्रण मुगल अधिकारियों के पास ही था।

प्रशासनिक कमजोरियाँ और असंतोष

मुगल प्रशासन में समय के साथ कई कमजोरियाँ उत्पन्न हुईं:

- राजस्व का अत्यधिक दबाव
- जागीरदारी प्रणाली का दुरुपयोग
- प्रशासनिक भ्रष्टाचार
- केंद्रीय सत्ता की कमजोरी

जिन्होंने शासन की प्रभावशीलता को धीरे–धीरे कमजोर कर दिया। प्रारंभ में यह प्रशासनिक ढाँचा अत्यंत संगठित और सक्षम था, परंतु उत्तरकालीन मुगल शासकों के समय में केंद्रीय नियंत्रण शिथिल होने लगा।

सबसे प्रमुख समस्या राजस्व व्यवस्था की कठोरता थी, जिसमें किसानों से अधिकतम कर वसूली की जाती थी। दहसाला प्रणाली का व्यावहारिक रूप कई स्थानों पर अत्यधिक दमनकारी बन गया, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती गई।[9]

इसके साथ ही जागीरदारी प्रणाली के विस्तार ने स्थिति को और जटिल बना दिया, क्योंकि मनसबदार अल्पकालिक लाभ के लिए अधिक से अधिक राजस्व वसूलने का प्रयास करते थे। स्थानीय अधिकारियों–जैसे अमील, कानूनगो और पटवारियों की स्वेच्छाचारिता और भ्रष्टाचार भी असंतोष का प्रमुख कारण बनी। प्रशासनिक तंत्र में उत्तरदायित्व की कमी के कारण इन अधिकारियों के विरुद्ध प्रभावी नियंत्रण नहीं रह गया था।

इसके अतिरिक्त, मुगल प्रशासन में उत्तराधिकार संबंधी संघर्षों और राजनीतिक अस्थिरता ने भी प्रशासनिक दक्षता को प्रभावित किया। केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने से प्रांतीय शासकों और जमींदारों की स्वायत्तता बढ़ी, जिससे शासन में एकरूपता समाप्त होने लगी।[10]

इन सभी कारकों ने मिलकर सामाजिक और आर्थिक असंतोष को जन्म दिया, जो धीरे–धीरे व्यापक जनअसंतोष में परिवर्तित हुआ और अंततः 1857 के विद्रोह के रूप में सामने आया।

1857 के विद्रोह पर प्रभाव

उत्तर प्रदेश में यह विद्रोह व्यापक रूप से फैला क्योंकिः

- किसानों और जमींदारों में असंतोष था
- सैनिकों को वेतन और पदोन्नति में भेदभाव का सामना करना पड़ा
- प्रशासनिक ढाँचा कमजोर हो चुका था

1857 का विद्रोह केवल एक सैन्य असंतोष का परिणाम नहीं था, बल्कि इसके पीछे गहरे सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारण निहित थे। उत्तर प्रदेश में यह विद्रोह विशेष रूप से व्यापक और तीव्र था, क्योंकि यह क्षेत्र मुगल प्रशासनिक ढाँचे का केंद्र रहा था और यहाँ उसकी कमजोरियाँ अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई थीं।

मुगल प्रशासन की विरासत के रूप में चली आ रही जमींदारी और राजस्व व्यवस्थाएँ, जो प्रारंभ में नियंत्रण और संसाधन–संग्रह का साधन थीं, समय के साथ शोषणकारी बन गईं। किसानों पर अत्यधिक कर भार और जमींदारों की कठोर वसूली ने ग्रामीण समाज में असंतोष को जन्म दिया। साथ ही, मनसबदारी प्रणाली के विघटन और प्रशासनिक असंतुलन ने सैनिक वर्ग को भी प्रभावित किया, जिससे उनमें असंतोष बढ़ा। मेरठ, कानपुर, झांसी और लखनऊ जैसे क्षेत्रों में विद्रोह की तीव्रता इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि प्रशासनिक असंतोष पहले से ही व्यापक रूप में मौजूद था।[11]

इसके अतिरिक्त, एरिक स्टोक्स के अनुसार 1857 का विद्रोह केवल सैनिकों का विद्रोह नहीं था, बल्कि यह ग्रामीण समाज के भीतर व्याप्त आर्थिक और सामाजिक तनावों का भी परिणाम था, जिसमें जमींदारों और किसानों दोनों की भागीदारी महत्वपूर्ण थी।[12]

विश्लेषण

यदि समग्र दृष्टि से देखा जाए तो मुगल प्रशासन प्रारंभ में अत्यंत प्रभावी, सुव्यवस्थित एवं केंद्रीकृत था, जिसने विशाल साम्राज्य के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सूबा, परगना तथा मनसबदारी जैसी संस्थाओं ने प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत किया, परंतु समय के साथ इनमें जटिलता और शिथिलता दोनों बढ़ती गईं। विशेषतः जागीरदारी व्यवस्था के विस्तार ने राजस्व वसूली को अनियमित और शोषणकारी बना दिया। राज्य की राजस्व–केन्द्रित नीतियों ने किसानों पर अतिरिक्त बोझ डाला, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हुई। इसके साथ ही स्थानीय अधिकारियों की स्वेच्छाचारिता और भ्रष्टाचार ने जनता के विश्वास को कम किया। प्रशासनिक तंत्र में जवाबदेही का अभाव भी एक गंभीर समस्या बन गया, जिससे शासन की वैधता प्रभावित हुई। इसके अतिरिक्त, मुगल प्रशासन में समय के साथ सामंजस्य की कमी और केंद्रीय सत्ता की कमजोर होती पकड़ ने स्थानीय शक्तियों को उभरने का अवसर दिया। इन परिस्थितियों ने सामाजिक असंतोष को गहराया, जो आगे चलकर विद्रोह के लिए उपयुक्त वातावरण में परिवर्तित हो गया।

अतः यह स्पष्ट होता है कि मुगल प्रशासनिक ढाँचा, जो कभी शक्ति का स्रोत था, वही अपनी आंतरिक कमजोरियों के कारण अस्थिरता का कारण बन गया और 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार करने में सहायक सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि मुगल कालीन प्रशासनिक संरचना ने 1857 के विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रारंभिक चरण में यह प्रशासनिक व्यवस्था संगठित, प्रभावी और दूरदर्शी थी, जिसने शासन को स्थायित्व प्रदान किया किन्तु समय के साथ इसकी संरचनात्मक कमजोरियाँ उभरकर सामने आईं, जैसे–राजस्व की कठोर नीतियाँ, जागीरदारी शोषण, तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार। इन कारणों से सामाजिक और आर्थिक असंतोष बढ़ता गया, जिसने विद्रोह की नींव रखी। इसके अतिरिक्त, स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक नियंत्रण की कमी और अधिकारियों की स्वेच्छाचारिता ने जनता के बीच शासन के प्रति असंतोष को और अधिक गहरा किया। यह असंतोष केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सैनिकों और जमींदारों में भी फैल गया, जिससे विद्रोह को व्यापक समर्थन मिला।

अतः यह कहा जा सकता है कि 1857 का विद्रोह एक आकस्मिक घटना नहीं था, बल्कि यह मुगल प्रशासनिक ढाँचे की दीर्घकालिक कमजोरियों, सामाजिक–आर्थिक असंतुलन और राजनीतिक अस्थिरता का परिणाम था, जिसने भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की भूमिका निभाई।

संदर्भ

1. चंद्र, सतीश, मध्यकालीन भारतः सल्तनत से मुगलों तक, 2007, ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 118–150।
2. हबीब, इरफान, मुगल भारत की कृषक व्यवस्था, 2013, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 250–310।
3. चंद्र, सतीश, पूर्वोक्त, पृ. 132।
4. मजूमदार, आर.सी., मुगल साम्राज्य, 1974, भारतीय विद्या भवन, पृ. 215।
5. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 305।
6. चंद्र, सतीश, पूर्वोक्त, पृ. 142।
7. चंद्र, सतीश, पूर्वोक्त, पृ. 148।
8. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 322।
9. मजूमदार, आर.सी., मुगल साम्राज्य, 1974, भारतीय विद्या भवन, पृ. 210–240।
10. चंद्र, सतीश, पूर्वोक्त, पृ. 158।
11. सेन, एस.एन., 1857, 1957, पब्लिकेशन्स डिवीजन, पृ. 80–100।
12. स्टोक्स, एरिक, किसान सशस्त्र संघर्षः 1857 का भारतीय विद्रोह, 1986, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 135।

पंकज शर्मा, ईमेल– pankaj08041990@gmail.com फोन नम्बर–801020165